भारतीय संगीत में पत्रकारिता एवं समालोचना

डॉ0 इला मालवीय
विभागाध्यक्ष संगीत गायन
आर्य कन्या डिग्री कालेज,
इलाहाबाद

पत्रकारिता एक कला है। जैसे प्रत्येक संगीत शिक्षार्थी शिक्षक या कलाकार नहीं बन सकता। उसी प्रकार प्रत्येक पढ़ा–लिखा व्यक्ति पत्रकार नहीं बन सकता। पत्रकारिता के लिए प्रभावशाली लेखन के साथ–साथ कुछ विशिष्ट गुणों की अनिवार्यता होती है, जिनमें सम्बन्धित विषय का ज्ञान, दूसरों के भावों को समझने और उन्हें यथावत अभिव्यक्त करने की क्षमता, निर्भीकता एवं निरपेक्ष दृष्टिकोण का होना विशेषकर महत्वपूर्ण है।

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था, जिसने हमें वाग्देवी सरस्वती को लक्ष्मी के वाहन पर आसीन करने जैसा समझौतापूर्ण समर्पण करने को विवश कर दिया है। आयोजित संगोष्ठी में विचार मंथन हेतु चयनित विषय "संगीत–जीविकोपार्जन के विविध आयाम", हमारी आवश्यकता बन चुकी इसी विवशता का द्योतक है।

आधुनिक काल में संगीत से संबंधित पुस्तकों, ग्रन्थों समाचार पत्र सीमित मात्रा में उपलब्ध है। भारत में शिक्षा संस्थानों का प्रारम्भ अधिकतम 125 वर्ष पुराना है। देश के गिने चुने संगीत प्रकाशन है जैसे – हाथरस संगीत काकर्यालय हाथरस, इलाहाबाद संगीत सदन, पाठक पब्लिकेशन आदि।[1]

विचारों के चक्रवात मतें अप्रभावित रहना सम्भव नहीं है। भारतीय संगीत के शास्त्रीय और उपशास्त्रीय स्वरूप में शास्त्रीय शब्द के युक्त होने का तात्पर्य इसकी वैज्ञानिकता अर्थात् सत्य से है। संगीत का सत्य समस्त चेतनाओं को केन्द्रित कर आत्मावलोकन के माध्यम से परम सत्य की अनुभूति कराना है। इसका स्वरूप अभौतिक है, सूक्ष्म है। दूसरी तरफ सामाजिक प्राणी होने के कारण हमारी प्रवृत्ति हमें समाज में सम्मान पूर्वक रहने के लिए प्रेरित करती है।

समाज द्रुत गति से सूक्ष्म से स्थूल की ओर दौड़ रहा है। स्थूल जगत में 'Survival of the Fittest' का सिद्धान्त लागू होता है। अतःसंगीतोपासक के समक्ष इसे जीविकोपार्जन का साधन बनाना भी बाध्यकारी हो गया है। व्यवसायीकरण के आधुनिक दौर मं संगीत के साथ जो घट रहा है, समालोचना और पत्रकारिता के माध्यम से उसके लिए कुछ कर सकना जीविकोपार्जन के साथ

ही अपराधबोध से मुक्त रह सकने के साथ ही संगीत जगत में आ रही विकृतियों को अंकुशल लगाने में भी सहायक हो सकता है। ऐसे संगीतज्ञों के लिए जीविकोपार्जन का जिनमें मंचीय प्रस्तुतिकरण या गुरू के रूप में कार्य करने की क्षमता नहीं है, किन्तु उन्हें सशक्त तथा प्रभावशाली लेखनी का वरदान प्राप्त है।

मुद्रण प्रणाली की सुविधा ने संगीत जगत को एक नई दिशा प्रदान की जिससे संगीत संबंधी प्रचुर सामग्री मुद्रित रूप में उपलब्ध है। घरानों की शैलीगत विशेषता जन साधरण में उपलब्ध होने लगी।[2]

वर्षो से कला को समाज का दर्पण मानने की परिपाटी चली आ रही है, और यह अकाट्य सत्य है। किन्तु मेरे विचार से इस दर्पण के भी दर्पण होते हैं – समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें एवं अन्य संचार संसाधन।

उदाहरण हेतु किसी कलात्मक प्रस्तुति या विचार संगोष्ठी को देखने अथवा सुनने के लिए आयोजन के स्थल पर तो एक निश्चित सीमा में ही लोग एकत्रित हो पाते हैं, किन्तु उस प्रस्तुति द्वारा जो भी संदेश दिया जाता है उसे ये पत्र–पत्रिकाएं तथा संचार संसाधन पूरे देश में एक ही समय में सम्प्रेषित करने में समर्थ होते हैं।

आज भारत वर्ष में विविध भाषाओं में अनेक दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं और अनेक टी.वी. चैनल भी उपलब्ध हैं। किन्तु विडम्बना यह है कि इनमें कला और विशेषकर संगीत एवं नृत्य सम्बन्धी समाचार ना के बराबर मिलते हैं। यद्यपि हमारे देश में सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन विविध छोटे–बड़े स्तर पर प्रायः होता ही रहता है। जहाँ समाचार पत्रों में अन्य समाचारों की विस्तृत चर्चा रहती है वहीं इन प्रायः महत्वपूर्ण संगीत कार्यक्रमों की चर्चा यदि प्रकाशित भी होती है तो बहुत ही अल्प एवं अपर्याप्त। बहुत कम ही पत्र–पत्रिकाओं में स्तरीय लेख, समालोचनाएं व समाचार पढ़ने को मिलते हैं। इस सबके पीछे कोई प्रतिद्वन्द्विता या शत्रुता का भाव कदापि नहीं होता है, अपितु इस असंतोषजनक स्थिति का कारण है, संगीत के प्राविधिक या तकनीकी ज्ञान का प्रायः पत्रकारिता में अभाव। तभी तो उनकी लेखनी एक उच्च स्तरीय कार्यक्रम को भी अतिसाधरण बना देती है और कभी बहुत ही साधारण से कार्यक्रम को प्रशंसाओं से लाद देती है। प्रायः तो यह स्थिति होती है, कि कई पत्रकार आयोजित कार्यक्रम के आरम्भ या अन्त में उपस्थित होते हैं और कार्यक्रम आयोजकों से ही सम्बन्धित कार्यक्रम की लिखित जानकारी लेकर

उसे प्रकाशित कर देते हैं। किन्तु सम्बन्धित विषय की गहनता से अनभिज्ञ होने के कारण पर्याप्त और प्रमाणिक रिपोर्ट प्रकाशित होने से रह जाती है।

चिन्ता का विषय यह है कि स्तरीय और प्रामाणिक लेखों/समाचारों की तुलना में ऐसे भ्रामक एवं रिक्तिपूर्ण समाचारों/लेखों की संख्या संगीत क्षेत्र में अधिक होने से प्रायः संगीत जगत को सीधी क्षति पहुँचती है।

संगीत के शुभचिन्तकों ने इस गम्भीर बिन्दु पर अवश्य दृष्टिपात किया होगा। अनेक विषय जैसे संगीत मनोविज्ञान, मानसिक चिकित्सा शास्त्र के महत्व को समझ कर लेखन कार्य हो रहे हैं।[3] संगीत की जानकारी रखने वाले ये सभी संगीत सुधी, जिनमें लेखन तथा अभिव्यक्ति की (पत्रकारिता सम्बन्धित) क्षमता भी है और संगीत सेवा की भावना भी, ऐसे व्यक्तियों को निश्चय ही पत्रकारिता तथा समालोचना के क्षेत्र में अपना श्रम देना चाहिए।

वर्तमान तकनीकी रूप से धनी युग में हमारे पास सूचनाओं एवं तकनीकी सुविधाओं का पर्याप्त भण्डार है। वो सब उपलब्ध है जिसकी हमसे दो पीढ़ी पूर्व के संगीत शिक्षार्थियों ने शायद कल्पना भी नहीं की होगी। आवश्यकता केवल इन संसाधनों की सही जानकारी एवं सदुपयोग की है। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पत्रकारिता के अल्पकालीन कोर्स की वर्तमान समय में व्यवस्था भी सुलभ है, जिसकी सहायता से संगीत सम्बन्धी पत्रकारिता में रूचि रखने वाले व्यक्ति अपनी रूचि को और भी अनुशासित व विशिष्ट रूप प्रदान कर सकते हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में वर्तमान समय में, संगीत के जानकार बहुत कम है। जबकि इस क्षेत्र में संगीतज्ञ पत्रकारों की बहुत आवश्यकता प्रतीत होती है। अपने संगीत का वास्तविक एवम् प्रामाणिक स्वरूप जनसाधरण तक नहीं लेखों से पहुँच सकता है, जो विषय के विशेषज्ञ द्वारा लिखा गया हो। संगीत से अनभिज्ञ पत्रकारों से ऐसी अपेक्षा करना कदापि तर्कसंगत नहीं है। संगीत शिक्षार्थियों को पत्रकारिता का क्षेत्र नवीन अवश्य लग सकता है किन्तु यथोचित प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् यदि वे इस क्षेत्र में पदार्पण करें तो, निश्चय ही उनका स्वागत होगा। कुशल संगीत पत्रकार एवम् समालोचक के रूप में ऐसे योग्य व्यक्तियों की उन्नति का मार्ग सदैव खुला है। वर्तमान तकनीकी रूप से धनी युग में हमारे पास सूचनाओं का भंडार है।[4]

संगीतज्ञ पत्रकारों के अभाव को हमारे देश के कुछ पत्रकारों एवम् सम्पादकों ने अनुभव किया और कुछ ऐसे व्यक्तियों को खोजा जो पत्रकारिता एवं संगीत से परिचत हैं। ऐसे ही कुछ पत्रकार दिल्ली, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, गुजरात, तमिलनाडु, पंजाब एवम् उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों

से प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं से संलग्न हैं, और आवश्यकता पड़ने पर कलात्मक आयोजनों की प्रामाणिक एवं स्तरीय समालोचना प्रस्तुत करते रहते हैं। इन्हीं की लेखनी के बल पर संगीत जगत का जन साधरण से सम्पर्क बना हुआ है।

यदि इस बिन्दु पर योग्य व्यक्ति रूचि लें तो निश्चय ही आत्मोद्धार के साथ–साथ संगीत जगत, पत्रकारिता जगत और पूरे देश को लाभ होगा साथ ही समाज की मूल धारा से संगीत का सु–संवाद स्थापित हो सकेगा।

संदर्भ–ग्रन्थ

1– संगीत संचयन – सुभद्रा चौधरी – पृ0सं0 32

2– भारतीय संगीत का मीडिया और संस्थानों का योगदान – डॉ0 राधिका शर्मा – पृ0सं0 – 176

3– शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता में सांगीतिक संस्थाओं का महत्व – डॉ0 भावना रानी, पृ0सं0 98

4– संगीत शिक्षण के विविध आयाम – डॉ0 कुमार ऋषितोष, पृ0सं0 269